श्रमण २००२ ०७ (फोल्डर नं. ०२५०४७)

सम्पादक - डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल

सम्पादकीय

अनुक्रमणिका

तीर्थङ्कर अरिष्टनेमि – डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय ---------- १-११

आचार्य हरिभद्र की योग दृष्टियाँ – एक विवेचन – डॉ. सुधा जैन ---------- १२-२१

आचार्य हरिभद्रसूरि प्रणीत ' उपदेशपद' – एक अध्ययन – डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' ---------- २२-३६

जैनाचार्यों का छन्द – शास्त्र को अवदान – कु. मधुलिका ---------- ३७-५१

'अग्रवाल' शब्द की प्राचीनता विषयक एक और प्रमाण – श्री वेदप्रकाश गर्ग ---------- ५२-५४

अर्बुदमण्डल में जैनधर्म – डॉ. सोहनलाल पाटनी ---------- ५५-६०

ईतिहास की गौरवपूर्ण विरासत – काँगडा के जैन मन्दिर – श्री महेन्द्र कुमार 'मस्त' ---------- ६१-६२

अयोध्या से प्राप्त अभिलेख में उल्लिखित नयचन्द्र रम्भामज्जरी के कर्ता नहीं – शिवप्रसाद ---- ६३-६४

खरतरगच्छ – रुद्रपल्लीय शाखा का ईतिहास – शिवप्रसाद ---------- ६५-९३

जैनागमों में शिक्षा का स्वरुप – श्री दुलीचन्द जैन ---------- ९४-१०५

जैन आगम साहित्य में नरक की मान्यता – डॉ. मनीषा सिन्हा ---------- १०६-११०

सामाजिक – राजनैतिक समस्याओं का समाधान – अनेकान्त – डॉ. हेमलता बोलिया -------- १११-११५

जैन संस्थाएँ एवं समाज में उनका योगदान – डॉ. शैलबाला शर्मा ---------- ११६-१२४

Jaina Kosa Literature – Dr. Ashok Kumar Singh ---------- 125-159

विधापीठ के प्रांगण में ---------- १६०-१६३

जैन जगत ---------- १६४-१६७

साहित्य – सत्कार ---------- १६८-१७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org